om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 12

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं यूनिवर्स को पावन बनाने वाली सतोप्रधान आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - मेरे ऑनेस्ट वो बच्चे हैं जो यूनिवर्स को पावन बनाने की सेवा करें। तुम बच्चों को अपनी सतोप्रधान वृत्ति से प्रकृति के पांचों तत्वों एवं सर्व आत्माओं को सतोप्रधान बनाने के लिए पावरफुल वायब्रेशन्स फैलाने हैं।

अव्यक्त अनुभव - (1) मैं सतोप्रधान आत्मा हूँ...समस्त ब्रह्माण्ड कणों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ा है....मैं यदि अपनी इस देह रूपी प्रकृति के सम्पर्क में हूँ तो ब्रह्माण्ड के अंतिम कण के भी सम्पर्क में हूँ...सम्पूर्ण प्रकृति से जुड़ा हुआ हूँ....मैं प्रकृति के पांचों तत्वों को सम्मुख उनके उसी रूप में देख रहा हूँ....जब मैं पृथ्वी कहता हूँ तो मेरा यह सम्पूर्ण शरीर भी पृथ्वी के सेल्स में परिवर्तन हो जाता है और सम्पूर्ण प्रकृति से जुड़ जाता है....अब मैं सतोप्रधान आत्मा, पवित्रता के सागर महाज्योति से बुद्धि द्वारा जुड़ उससे पवित्रता की अपार किरणें स्वयं में प्रवाहित होती अनुभव करती हूँ और मेरे द्वारा यह किरणें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पृथ्वी तत्व तक पहुंच उन्हें पावन बना रही हैं...इसी प्रकार आकाश तत्व को अपनी देह सहित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैले देखता हूँ ....उस विराट पोलार में मैं स्वयं को आत्मा रूप में स्थित देखता हूँ...इसी प्रकार वायु तत्व, जल व अग्नि तत्व को इमर्ज कर उन्हें भी पावन सतोप्रधान बना रहा हूँ...।

(2) मैं सतोप्रधान आत्मा अपने सम्मुख सम्पूर्ण ग्लोब को इमर्ज करता हूँ....सभी आत्माएं सितारों की तरह प्रकाशित हैं....सभी आत्मा रूपी सितारों को पवित्र वायब्रेशन्स दे रहा हूँ...उन्हें सतोप्रधान बनने की प्रेरणा दे रहा हूँ....सभी को मायाजीत बनने का वरदान दे रहा हूँ ...पांच विकारों से मुक्त कर रहा हूँ..।

लेखन के लिए टॉपिक - 1. यूनिवर्स की सेवा करने के लिए विभिन्न वीज़न चिन्तन व योगाभ्यास से निकालें 2. सतोप्रधान अवस्था की विशेषताओं को लिखें। 3. सतोप्रधान अवस्था न बन पाने के कारण क्या हैं?

तीव्र पुरुषार्थियों के लिए प्रेरणाएं - हे सतोप्रधान आत्माएं! कितना अतीन्द्रिय सुख व परमानंद है सतोप्रधान अवस्था में। संगमयुग का बहुत थोड़ा समय मिला है इस सुख को अनुभव करने के लिए। सतयुग में तो हम हैं ही नेचुरल सतोप्रधान स्थिति में, पर इस अवस्था के सुख व महत्व का ज्ञान तो इस समय ही है। तो आइये अब यह दृढ़ संकल्प कर लें कि इस अवस्था से मुझे कोई भी बात नहीं हिला सकती, अब मुझे कोई भी पेपर डिगा नहीं सकता। बस अब स्थेरियम हो जाना है।

स्वमान - मैं साक्षात्कारमूर्त आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - साक्षात्कार, सम्पूर्ण और सम्पन्न आत्मा का होता है। जब आप बच्चे साक्षात्कार मूर्त, सम्पन्न बाप समान बन जायेंगे तो आपको कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी, स्वत: ही आपका साक्षात्कार उनको और उनका साक्षात्कार आपको होगा। जैसे आपने अंतिम समय में साकार मात-पिता की स्टेज देखी -सबके बीच में होते, प्रकृति के बंधन में होते हुए भी न्यारे-प्यारे लगते थे, सबको दूर से ही साक्षात्कार होता था। सब अव्यक्त स्थिति में ऑटोमेटिकली स्थित हो जाते थे। उनको सूक्ष्मवतन का, परमधाम का, नई दुनिया का अनुभव हो जाता था। तो आप बच्चे भी जब साक्षात्कार मूर्त, साक्षात बाप समान बन जायेंगे तो समझो प्रत्यक्षता हुई कि हुई।

अव्यक्त अनुभव - (अ) अंतिम समय का दृश्य इमर्ज करें...सभी आत्माएं एक साथ वापिस जा रही हैं...बाबा-मम्मा आगे-आगे, उनके पीछे सभी दादियां और ढेर सारी आत्माओं का समूह, एक-दो के पीछे-पीछे बारात की तरह सूक्ष्मवतन से होते हुए मूलवतन की ओर जा रहे हैं।

(ब) अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप को देखें...पवित्रता, शांति आदि दिव्य गुणों से सम्पन्न लाइट के कार्ब में अपने सम्पन्न स्वरूप को देखें...सभी ब्राह्मण आत्माएं, भक्त आत्माएं आपके उस स्वरूप को देख हर्षित हो रही हैं...सभी को आप फरिश्ते से पवित्रता, सुख, शांति, आनंद की अनुभूति हो रही है...सभी आपकी लाइट से बहुत हल्केपन का अनुभव कर रहे हैं।

लेखन के लिए टॉपिक - 1. मायाजीत, प्रकृतिजीत व कर्मेन्द्रिय जीत कैसे बनें 2. ब्रह्मा बाबा किन धारणाओं व किस पुरुषार्थ के आधार पर सम्पन्न सम्पूर्ण बने, उसका मनन करें?

तीव्र पुरुषार्थियों के लिए प्रेरणाएं - हे तपस्वी आत्माओं! हम सभी के सम्पन्न व सम्पूर्ण स्वरूप का संसार की सभी दुखी व अशांत आत्माएं व तमोप्रधान प्रकृति इंतजार कर रही है...। वे इंतज़ार कर रही हैं कि हम सभी पुण्य आत्माओं का ताकि उनके दुख दूर हो सकें और वे मुक्ति-जीवनमुक्ति की अंचली प्राप्त कर सकें। हम सभी विश्व की आत्माओं के पूर्वज हैं...हमारे सतोप्रधान वायब्रेशन्स से ही सर्व आत्माएं व प्रकृति भी सतोप्रधान बन जाएंगी। तो आइये हम उस स्थिति तक पहुंचने के लिए तीव्र पुरुषार्थ की अगन तेज़ करें।

वेब वर्ल्ड ब्रह्माकुमारीज़

www.brahmakumaris.org

www.brahmakumaris.org, ब्रह्माकुमारीज़ की एक अंतर्राष्ट्रीय वेबसाइट है जिसपर एक क्लिक से आप संस्था के इतिहास से लेकर आज वर्तमान समय तक के सभी कार्यों से परिचित हो सकते हैं। यदि आप मेडिटेशन सीखना चाहते हैं तो आपको यहाँ पर इसकी विधि तथा स्वयं की पहचान प्राप्त करने के लिए कई कॉमेन्ट्रीज़ प्राप्त होंगी। इसमें एक ईज़ी सर्च टैब है जो आपको अपने नज़दीकी सेंटर्स से अवगत करायेगा जिससे आपको संस्था से जुड़ने में सुविधा होगी।

इस वेबसाइट पर आप संस्था के फाउण्डेशन कोर्स, पॉज़ीटिव थिंकिंग कोर्स, स्ट्रेस फ्री लिविंग सेमिनार्स आदि का भी लाभ ले सकते हैं जो आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में बहुत आवश्यक है। यह वेबसाइट आपको राजयोग मेडिटेशन द्वारा अपना जीवन सुंदर बनाने वाले लोगों के अमूल्य अनुभवों से भी अवगत करायेगी।

तो आइये www.brahmakumaris.org से जुड़कर सकारात्मक सोच की ओर अपने कदम बढ़ायें और अपने जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर जीवन को सही दिशा दें।

ओमकारेश्वर। महाप्रबंधक जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शक्ति,खांडवा सेवाकेन्द्र संचालिका।

देववंद-गुज्जरवाड़ा। सी.ओ. सुरेश कुमार सिंह व उनकी धर्मपत्नी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा।

कच्छ-नखत्राणा। डी.वाय.एस.पी. चिंतन तरैया व पी.एस.आई. ए.एम. राठोड को राखी बांधते हुए ब्र.कु. किरण।

मोगा। चीफ ज्युडीशियल मजिस्ट्रेट को राखी बांधते हुए ब्र.कु. संजीवनी। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई।

सिरसा-शांति सरोवर। जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दू।

मुम्बई-सांता क्रूज़। पद्म भूषण डॉ. रामाकांत पण्डा,कार्डियक सर्जन व एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट के वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीरा तथा ब्र.कु. तपस्विनी।